केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली
सैकण्डरी स्कूल परीक्षा (कक्षा दसवीं)
परीक्षार्थी प्रवेश–पत्र के अनुसार भरें

विषय Subject : Hindi (B)

विषय कोड Subject Code : 085

परीक्षा का दिन एवं तिथि
Day & Date of the Examination : 10-3-17, Friday

उत्तर देने का माध्यम
Medium of answering the paper : Hindi

प्रश्न पत्र के ऊपर लिखे कोड को दर्शाए :
Write code No. as written on the top of the question paper :

Code Number	Set Number
4/2	① ● ③ ④

अतिरिक्त उत्तर–पुस्तिका (ओं) की संख्या
No. of supplementary answer-book(s) used: —

विकलांग व्यक्ति :
Person with Disabilities : हाँ / नहीं Yes / No: NO

किसी शारीरिक अक्षमता से प्रभावित हो तो संबंधित वर्ग में ✓ का निशान लगाएं।
If physically challenged, tick the category

B D H S C A

B = दृष्टिहीन, D = मूक व बधिर, H = शारीरिक रूप से विकलांग, S = स्पास्टिक
C = डिस्लेक्सिक, A = ऑटिस्टिक
B = Visually Impaired, D = Hearing Impaired, H = Physically Challenged
S = Spastic, C = Dyslexic, A = Autistic

क्या लेखन – लिपिक उपलब्ध करवाया गया : हाँ / नहीं
Whether writer provided : Yes / No: NO

यदि दृष्टिहीन हैं तो उपयोग में लाए गये सॉफ्टवेयर का नाम :
If Visually challenged, name of software used : —

एक खाने में एक अक्षर लिखें। नाम के प्रत्येक भाग के बीच एक खाना रिक्त छोड़ दें। यदि परीक्षार्थी का नाम 24 अक्षरों से अधिक है, तो केवल नाम के प्रथम 24 अक्षर ही लिखें।
Each letter be written in one box and one box be left blank between each part of the name. In case Candidate's Name exceeds 24 letters, write first 24 letters.

कार्यालय उपयोग के लिए
Space for office use

5371950
085/00464

खण्ड - क

उत्तर। क इस काव्यांश में भारत माता को ग्राम-वासिनी कहा गया है। ग्राम अर्थात् गाँवों में आज भी हरियाली होती है, खेतों में फसल लहराते हैं, पवित्र नदियाँ बहती हैं एवं पवित्र माटि जिसे हम धूल कहते हैं वह भी चारों ओर फैली होती है। पशु-पक्षी सुरक्षित एवं प्रसन्नता पूर्वक विचरण करते हैं एवं गाँव के लोग मेहनती, भोले एवं सच्चे होते हैं। गाँव आज भी प्रदूषण से बचा हुआ है, इसलिए ऐसे मनोरम स्थान में ही भारत-माता का वास हो सकता है, अतः भारतमाता को ग्रामवासिनी कहा गया है।

उत्तर। ख प्रस्तुत काव्यांश में भारतमाता को प्रवासिनी कहा गया है। उन्हें अब अपने ही घर में प्रवासियों के भाँति रहना पड़ता है इसलिए उन्हें प्रवासिनी कहा गया है। युगों-से पीड़ित भारत माता अपने अधरों में चिर नीरव रोदन लिए हुए अपने ही घर में परायों की भाँति निवास करती हैं। इसी कारण वश भारत-माता को प्रवासिनी कहा गया है।

उत्तर। ग कवि ने बड़े ही भारी हृदय से भारतमाता के सन्तानों के विषय में कहा है कि उनके तीस कोटि सन्तान बिना वस्त्रों के जीवन गुजारते

हैं। आधे पेट खाना खाते हैं, अर्थात उन्हें ~~भूखे~~ भूखे ही सोना
पड़ता है। ~~इन~~ उनके ये सन्तान पीड़ित, शोषित एवं निरस्त्र
होते हैं। वे मूढ़, असभ्य, अशिक्षित, निर्धन एवं कमज़ोर
होते हैं। उन्हें जीवन व्यापन के लिए अतिरिक्त सुविधाएँ ~~अ~~ उपलब्ध
~~उपलब्ध~~ नहीं मिल पाती। वे अत्यंत ही दैनिय ~~अवस्था~~ स्थिति में
जीवन बिताया ~~करते~~ करते हैं।

उत्तर 1-ख कवि कहते हैं कि भारतमाता ग्राम-वासिनी हैं। उन्हें हरियाली
में रहना पसंद है। खेतों में लहराते फसल, नदियों में बहता पानी
एवं जंगलों में निवास करते पशु-पक्षी उन्हें अपनी ओर आकर्षित
करते हैं। उनका आंचल धूल से भरा हुआ होता है, ~~अर्थात~~
अर्थात उन्हें मिट्टी में ~~रहन~~ रहना पसंद है। परंतु उनकी बहुत
दैनीय ~~अवस्था~~ स्थिति हो ~~चुकि~~ गई है क्योंकि उन्हें अपने ही घर
में प्रवासियों के जैसे रहना पड़ता है। उन्हें और अधिक पीड़ा
यह जान कर होता है की उनके तीस करोड़ ~~सन्तान~~ संतान नग्न तन रहते
हैं एवं वे बेहद ही गरीब, अशिक्षित एवं असभ्य ~~हो~~ हैं। उनके ये
~~संन्तान~~ ~~संत~~ ~~सन्तानें~~ संतान शोषित, पीड़ित एवं ~~भूर~~ भूखे ~~पेट~~ पेट जीवन
गुजारते हैं। इस कविता से हमें यह ज्ञात होता है कि हमें अपने
देश से गरीबी, ~~भ्रष्ट~~ अशिक्षा एवं भेद-भाव ~~जैसे~~ ~~हानिकारक~~ को

जड़ से मिटाना होगा ताकि भारतमाता अपने ही घर में एक प्रवासिनी के भाँति न रहें और इनके ~~संतानों~~ संतानों को कोई कष्ट ना हो।

उत्तर २क बहुमुखी प्रतिभा का अर्थ है अपने भीतर एक नहीं अपितु दो या अधिक प्रतिभाओं का होना। बहुमुखी प्रतिभा का होना, अपने भीतर एक प्रतिभा के बजाय दूसरी प्रतिभा को खड़ा ~~कर~~ करना है। प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती। इसके आगे सारी समस्याएँ बौनी ~~बौ~~ बौनी हैं। लेकिन समस्या एक प्रतिभा को ~~खुद~~ दूसरी प्रतिभा से होती है। इससे हमारा नुकसान होता है। बहुमुखी लोग ~~~~ स्पर्द्धा से ~~बबराते~~ घबराते हैं। वे आलोचना से भी डरते हैं और अपने काम ~~क~~ में ~~तारीफ़~~ तारीफ़ ही ही तारीफ़ सुनना चाहते हैं।

उत्तर२ख मन की दुनिया की एक ~~विष~~ ~~विषे~~ विशेषज्ञ के अनुसार बहुमुखी होना आसान है परंतु ~~बह~~ बहुमुखी लोग स्पर्द्धा से ~~ड~~ घबराते हैं। कई विषयों पर उनकी पकड़ इसलिए होती है कि वे एक में ~~सख्त~~ स्पर्द्धा होने पर दूसरे की ओर भागते हैं। वे आलोचना से भी डरते हैं और अपने काम में ~~तारीफ़~~ तारीफ़ ही तारीफ़ सुनना चाहते ... ~~~~ ~~पहल~~ प्रश्न कम होती है। ऐसे लोगों के

~~असफल~~ असफल होने की ~~सं~~ संभावना अधिक होती है।

२२ग बहुमुखी होना आसान है, बजाय एक खास विषय के ~~विष~~ विशेषज्ञ होने की तुलना में। ~~बह ब~~ ऐसे लोग प्रतिभाशाली आज भी माने जाते हैं, लेकिन असफल होने की आशंका उनके लिए अधिक होती है। कई विषयों ~~प~~ पर इनकी पकड़ इसलिए होती है क्योंकि ~~कि~~ वे एक ~~र~~ में स्पर्द्धा होने पर दूसरे की ओर ~~भ~~ भागते हैं। आज वे लोग 'विंची सिंड्रोम' से पीड़ित माने जाते हैं, जिनकी पकड़ दो तीन या इससे ज्यादा क्षेत्रों में हो ~~लेकिन~~ लेकिन हर ~~क्षेत्र~~ क्षेत्र में इनसे बेहतर उम्मीदवार मौजूद हों।

२२घ बहुमुखी प्रतिभा ~~वाल~~ वाले लोगों के ~~भी~~ भीतर कई कामों को साकार करने की ~~इच्छा~~ इच्छा बहुत तीव्र होती है। ~~उनकी~~ उनकी उत्सुकता उन्हें एक से दूसरे क्षेत्र में हाथ ~~आज़~~ आज़माने को बाध्य करती है। वे प्राय: सफल नहीं ~~सफ~~ हो पाते। उनके हर क्षेत्र में हाथ आज़मने के कारण एक ऐसा समय आता है जब में हाथ आज़माने के बदले दखल देने लगते हैं। तब में न इधर के रह जाते हैं। न उधर के। इसी कारणवश के प्राय: ~~स~~ असफल रहते हैं।

उत्तर २.ङ: प्रबंधन की दुनिया में - 'एक के साधे सब सधे, सब साधे सब जाए' का मंत्र ही शुरू से प्रभावी रहा है अर्थात प्रबंधन के क्षेत्र में ऐसे लोगों की आवश्यकता होती है जो केवल एक कार्य में अपना पूरा जीवन समर्पित कर देते हैं क्योंकि ऐसे लोग ही अपने जीवन में सफल हो पाते हैं। परंतु जो लोग एक कार्य के बजाय अनेक कार्य के पीछे भागते उनकी स्थिति एक ऐसा व्यक्ति की तरह हो जाती है जिसने दो नावों पर पर रखा हो। वो व्यक्ति न घर रह जाता है, ना घाट का। इसलिए प्रबंधन के क्षेत्र में केवल ऐसे लोगों की आवश्यकता होती है जो अपने जीवन केवल एक लक्ष्य लिए प्रयासरथ रहते हैं।

उत्तर २-च प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती। प्रतिभा के आगे सारी समस्याएँ बौनी होती हैं। हर व्यक्ति के भीतर कोई-न-कोई प्रतिभा होती है, जिसे केवल पहचानने की देर होती है। जो व्यक्ति अपनी प्रतिभा को निखार पाता है वह अपने जीवन में सफल हो जाता है। प्रतिभा केवल प्रयास एवं परिश्रम से निखारा जा सकता है। प्रतिभा किसी की गुलाम नहीं होती अर्थात किसी भी व्यक्ति को प्रतिभाशाली बनने के लिए किसी का मोहताज नहीं होना पड़ता

खण्ड - ख

२३ वर्णों से निर्मित स्वतंत्र एवं सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं। उदाहरण - शेर, सेब, फल, जूता आदि।
उपर्युक्त उदाहरणों में शेर, सेब आदि शब्द क्योंकि वे वर्णों का एक सार्थक समूह हैं।

२४ (क) रोज़ व्यायाम करने के कारण वह स्वस्थ रहता है।
(ख) जो व्यक्ति परिश्रमी होता है, वह कभी खाली नहीं बैठता।
(ग) श्याम आज्ञाकारी है और वह माता-पिता की सेवा करता है।

(क) i) तीसरी क़सम → तीसरा है जो कसम (कर्मधारय समास)
ii) दिन - रात → दिन और रात (द्वंद्व समास)

(ख) i) चंद्रमुख (कर्मधारय समास)
ii) त्रिराह (द्विगु समास)

(क) आपने उससे क्या कहा है?
(ख) हमारे घर में उसकी बात होती रहती है।
(ग) यह गलती दुबारा नहीं होनी चाहिए।

6 (ख) बच्चे बहुत शोर मचा रहे हैं।

7 बेराह चलना - (उद्देश्य न होना या गलत पथ पर चलना) अच्छे मित्र न होने के कारण राम ~~बेह बे~~ बेराह चलने लगा।

अंधे के हाथ बटेर ~~लगा~~ लगना - (अयोग्य के हाथ बहुमूल्य वस्तु लगना) उस अनपढ़ के घर जब से एक डॉक्टर बहु आई है, तब से मानो अंधे के हाथ बटेर ~~लगाई~~ लग गई हो।

खण्ड - ग

उत्तर 8. जापानी लोग सदैव अमेरिका से होड़ करते रहते हैं। वे एक महीने का काम एक दिन में करते है, इसी कारण उनके दिमाग पर अत्यधिक ज़ोर पड़ता है और वह रोगी हो जाता है। जापान के लोग कभी भी शांत नहीं बैठते वे सदैव ~~र~~ कुछ न कुछ करते रहे हैं। ~~जबभी~~ ~~कबभि~~ जब ~~+~~ वे खाली होते हैं तो वे स्वयं से बड़बड़ाने ~~लगत~~ लगते हैं एवं व्यर्थ ही अपने दिमाग पर ज़ोर डालते हैं। अमेरिका से प्रतिस्पर्द्धा के ~~कर~~ कारण वे लोग ~~बेहद~~ हमेशा व्यस्त रहते हैं एवं स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं

देते जिसके कारण वे ~~मनोरुग्ण मानि~~ मानसिक रोगों से ग्रस्त हो जाते हैं। जापान के 80% लोग मानसिक रोगों से पीड़ित होते हैं। इस समस्या से बाहर निकलने के लिए झेन ~~परंपरा~~ परंपरा में लोग टी-सेरेमनी का प्रयोग करते हैं इस परंपरा के अनुसार व्यक्ति अपने दिमाग को शांत के लिए कुछ वक्त ~~दे~~ देना चाहिए। 'टी-सेरेमनी' चाय पीने की एक विधि है जिसे जापान में चा-नो-यू कहते हैं। इसमें लोग एक सुंदर एवं शांत पर्णकुटि में जाकर चाय का आनंद उठाते हैं परंतु इस जगह तीन से अधिक लोगों का प्रवेश ~~निषेध~~ निषेध है। इस प्रक्रिया में शांति बेहद महत्वपूर्ण है। उस कुटिया में चाय पिलाने वाला चाजीन होता है जो अतिथियों का स्वागत करता है एवं ~~उन्हें~~ उन्हें बैठने के लिए जगह देता है फिर वह बनाकर चाय पीने के लिए परोसता है परंतु चाय केवल दो ~~कुछ~~ घूट ही होती है जिसे ~~चू चूस चूस~~ चूस-चूसकर पिया जाता है। इस प्रक्रिया में ~~मानो~~ मानो दिमाग धीरे-धीरे बंद होने लगता है फिर एक समय ऐसा आता है कि व्यक्ति ~~उस~~ अनंतकाल में जीने लगता है। इसलिए टी-सेरेमनी एक बेहद ही लाभदायक परंपरा है जो हमें मनोरोगी होने बचाता है।

PTO

१(क) एक दिन जब शेख आयाज़ के पिता कुँए से नहा कर भोजन करने बैठे तो उन्हें अपने कंधे पर एक काला च्योंटा रेंगता हुआ नज़र आया। वे तुरंत उठ गए तब उनकी पत्नी ने उनके अचानक उठने का कारण पूछा तब उन्होंने कहा कि उन्होंने एक घरवाले को बेघर कर दिया है इसलिए उसे वापस उसके घर छोड़ने जा रहे हैं। उनके पिता ने तुरंत उस च्योंटे को कुँए पर छोड़ दिया और वह चला गया। इस घटना से हमें यह पता चलता है कि शेख आयाज़ के पिता बड़े ही दयालु एवं करुणावान व्यक्ति थे जिनके लिए सभी प्राणी एक समान हुआ करते थे।

१(ख) शुद्ध आदर्श शुद्ध सोने की भाँति ही बिल्कुल पवित्र होता है इसमें कोई मिलावट नहीं होती। परंतु जिस प्रकार शुद्ध सोने से आभूषण नहीं बनाए जा सकते उसी प्रकार शुद्ध आदर्शों का जीवन में पालन करना कठिन हो जाता है इसलिए शुद्ध आदर्शों में व्यवहारिकता का थोड़ा सा ताँबा मिलाकर उसे समाज में चलने लायक बनाया जाता है। जिस प्रकार शुद्ध सोने में ताँबा मिलाकर उसे मज़बूत एवं चमकदार बनाया जाता है उसी प्रकार आदर्शों में व्यवहारिकता

मिलाकर इसे जीवन उपयोग में प्रयोग हेतु ~~अ~~ लाभदायक बनाया जाता है।

१(ख) सआदत अली अवध के नवाब आसिफ़उद्दौला का भाई था। वह एक लालची, कपटी एवं भोग-विलासी था। वह एक ऐश पसंद व्यक्ति था। सआदत अली अवध का तख़्त पाने हेतु अंग्रेज़ों से मिल गया था। वह एक धूर्त व्यक्तित्व का स्वामी था।

२।०(क) उपर्युक्त गद्यांश में भूतकाल एवं भविष्यकाल के बारे में बात की गई है। भूतकाल जा चुका है एवं भविष्यकाल अभी तक आया नहीं। ~~एक~~ दोनों ही मिथ्या हैं। ~~मनि~~ मनुष्य सदैव ~~३~~ भूतकाल और भविष्य के बारे में सोच कर उलझन में फस जाता है। मनुष्य हमेशा भूतकाल की ~~खट्टी-म~~ खट्टी-मीठी यादों के बारे सोचता है वरना भविष्य के रंगीन सपने सजाते रहता है। दोनों ही काल इसे व्यर्थ की चिंतन करने पर विवश कर देते हैं।

१०(ख) लेखक के अनुसार वर्तमान काल ही सत्य है और हमें उसी में जीना चाहिए। ~~बस~~ ~~मुन~~ मनुष्य को ~~भूत~~ भविष्य के बारे में ना

सोचकर केवल वर्तमान में जीना चाहिए क्योंकि वर्तमान ही सत्य है। भूतकाल वह है जो बीत गया और भविष्य वह है जो आया भी नहीं इसलिए हमें अपने वर्तमान पर ध्यान देना चाहिए जिससे कि हमारा भविष्य रंगीन हो सके। हमें केवल भूतकाल से शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए और वर्तमान काल में अपने कर्म करते जाना चाहिए तभी हमारा भविष्य रंगीन हो सकेगा।

उत्तर 10 (ख) इस गद्यांश के माध्यम से कवि यह समझाना चाहते हैं कि हमें भूतकाल एवं भविष्य काल के बारे ना सोचकर केवल वर्तमान में जीना चाहिए क्योंकि एक काल बीत चुका है और दूसरा आया तक नहीं इसलिए केवल वर्तमान सत्य है और हमें इसी में जीना चाहिए।

उत्तर 11 (क) महान कवि बिहारी के अनुसार तिलक लगाना, जपमाला धारण करना, छापा लगाना, आदि अंधविश्वास एवं ढोंग होते हैं। ये सब केवल बाहरी आडम्बर दिखावा होते हैं। इन सब व्यर्थ की चीजों कोई उद्देश्य नहीं सिद्ध होता। भगवान ऐसे ढोंगी एवं

अंधविश्वासी लोगों को कभी सफल नहीं होने देते। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए केवल शुद्ध मन एवं पवित्र आत्मा की आवश्यकता ~~होती~~ होती है। यदि किसी मन अशुद्ध हो लेकिन वह प्रभु नाम सदैव जपता हो एवं अनेक दिखावे करता ~~होत~~ हो तो उसे भगवान ~~का~~ कभी नहीं मिलते। भगवान तो केवल शुद्ध हृदयी को ही प्राप्त होते हैं।

ख) कवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'मनुष्यता' कविता में ~~सभी~~ सभी को एक-साथ एकजुट होकर चलने को कहा है क्योंकि एकता में बल होती है। कवि के अनुसार मनुष्य को उदार, करुणावान एवं परोपकारी होना चाहिए। कवि के अनुसार हम सभी एक ही त्रिलोक नाथ के संतान हैं इसलिए हम सभी बंधु हैं। हमें एक दूसरे के सुख-दुख में साथ रहना चाहिए एवं एक-दूसरे की सहायता करते हुए जीवन पथ पर आगे बढ़ना चाहिए। एक साथ चलने पर हम एक-दूसरे के कष्ट को निवार सकते हैं ~~व~~ एवं मार्ग आने वाले ~~कठिनाइयों~~ कठिनाइयों का सामना ~~आसानी से~~ आसानी से कर सकते हैं।

PTO

उत्तर ।।(ग) कवि रवींद्रनाथ ठाकुर ने ईश्वर यह प्रार्थना की है कि वे उनमें कष्टों से लड़ने का साहस एवं धैर्य दे दें। कवि प्रभु से निवेदन करते हैं कि जब ~~अब~~ उन्हें कोई सहायक ना मिले और उनके ~~s~~ जीवन में ~~*~~ केवल अंधकार हो तब भी ~~के~~ वे अपना धैर्य ना हारें और उस वक्त भी साहस से काम लें। वे प्रभु से विनती करते हैं कि दुख के समय में वे कभी भी ईश्वर न दोषी ठहराएँ।

उत्तर 12. 'कर चले हम फ़िदा' ~~के~~ कविता 1962 में हुए भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि ~~में~~ पर ~~बनी~~ बनी फिल्म हकीकत के लिए शायर कैफ़ी आज़मी द्वारा बनाया गया था। इस कविता में एक घायल मरणासन्न सैनिक अन्य सैनिकों एवं युवाओं से अनुरोध करता है कि जिस प्रकार उसने एवं उसके अन्य साथियों ने बिना अपने प्राणों की परवाह ~~किए~~ किए ~~ब~~ अपने देश की रक्षा की उसी प्रकार आने वाली युवा ~~पीढ़~~ पीढ़ी को भी अपने देश की सुरक्षा हेतु सिर पर कफ़न बाँधकर तैयार रहना ~~होग~~ होगा। कवि के अनुसार देश की ~~सुरक्षा~~ सुरक्षा। का दायित्व केवल सैनिकों ही का ही होता ~~अपित~~ अपितु सभी

देशवासी का भी होता है। उस घायल सैनिक ने सभी युवाओं से अनुरोध किया है कि जिस प्रकार उसने अपने नब्ज बंद होने तक देश की रक्षा की उसी प्रकार भावी युवा पीढ़ी को भी बिना प्राणों की चिंता किए दुश्मनों का सामने सामना करने के लिए तैयार रहना होगा। सैनिक के अनुसार राम भी हम और लक्ष्मण भी हम ही हैं अतएव हमें ही अपनी धरती भारत माँ की रक्षा हेतु तत्पर रहना होगा। अतः कवि के अनुसार पूरे देश वासियों को समय आने पर अपनी देश की रक्षा के लिए तैयार रहना होगा।

6). पाठ 'टोपी शुक्ला' में टोपी एक मेधावी छात्र होने के बावजूद कक्षा में दो बार फेल हो गया। पहली बार जब वह फेल हुआ तो उसे अपने घरवालों के कटु वचन सुनने पड़े। टोपी की दादी ने उसे अनेक उलाहने दिए एवं अपने से छोटे छात्रों के साथ एक ही कक्षा में बैठना टोपी के लिए बहुत ही अपमान जनक था। टोपी पढ़ाई में अच्छा था परंतु जब भी वह पढ़ने बैठता तो उसका बड़ा भाई मुन्नी बाबू उसे कोई काम थमा देता, या फिर

इसकी माता उसे बाज़ार सामान लाने हेतु भेज देती । उसका छोटा भाई ~~उ~~ इसके कॉपियों के जहाज़ बना कर उड़ा देता इन सभी परेशानियों की ~~व~~ वजह से टोपी कक्षा में ~~दो बार~~ फेल हो गया और दूसरी बार इसे टायफाइड हो गया था, इस वजह से वह पढ़ न सका और फेल हो गया । ~~दो~~ ~~म~~ दो बार फेल होने के कारण अध्यापक भी उससे कटु ~~व~~ वचन कहने लगे एवं उसका ~~उपह~~ उपहास उड़ाने लगे ~~टोपी~~ टोपी भीतर से मर ~~चु~~ चुका था । उसके कक्षा के छात्र तक उसका मज़ाक बनाते थे । ~~ज~~ जब टोपी मेहनत करके किसी प्रश्न का जवाब ~~द~~ देने का प्रयास करता तो उसे अगले साल उत्तर देने को कह दिया जाता । यह सब उलाहने सुन-सुन कर टोपी बिल्कुल मर सा गया था । यह सारे व्यवहार मानवीयता के विरुद्ध हैं । टोपी के अध्यापकों को उसकी सहायता करनी चाहिए थी एवं उसके माता-पिता को उसे लाड़-प्यार से ~~•~~ समझाना चाहिए था ताकि वह अकेला न महसूस ~~करे~~ करे ।

खण्ड - घ

दिल्ली पब्लिक स्कूल
रायपुर

सूचना

दिनांक - 10 मार्च 2017

योगा अभ्यास की कक्षाएँ हेतु।

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि 18 मार्च 2017 से लेकर 30 मार्च 2017 तक स्कूल की छुट्टी के दिनों में प्रातः काल योगा की अभ्यास हेतु कक्षाएँ ~~चा~~ ~~चलनी~~ चलते जा रही हैं। यह कक्षाएँ सुबह 6:00 बजे से लेकर 8:00 बजे तक स्कूल के प्रांगन में होगी। इच्छुक ~~विद्यार्थि~~ विद्यार्थी अपना नाम अपनी ~~क्ष~~ कक्षा के अध्यापकों को दे दें। नाम देने की अंतिम तिथि 15 मार्च 2017 है।

प्रधानाचार्य

5.

सेवा में,
प्रधानाचार्य
दिल्ली पब्लिक स्कूल
मेरठ
दिनांक- 10 मार्च 2017
विषय:- ठेले और रेहड़ी वालों द्वारा जंक फूड बेचे जाने की शिकायत हेतु।

महोदय,
सविनय निवेदन है कि मैं ~~कक्षा~~ आपके स्कूल की कक्षा ~~10(B) की~~ 10(बी) की छात्रा हूँ। इस पत्र द्वारा मैं आपका ध्यान विद्यालय के गेट पर बिक रहे जंक फूड की ~~ले~~ आकार्षित आकर्षित करना चाहती हूँ। मध्यावकाश के समय स्कूल के गेट पर ठेले वाले ~~एवं~~ एवं रेहड़ी वाले जंक फूड बेचा करते हैं, इस की वजह से अनेक छात्र बीमार पड़ रहे हैं। मैं आपसे निवेदन करती हूँ की आप जल्द से जल्द कोई कठोर कदम ~~लेवें~~ लें ताकि और छात्र इस जंक फूड फूड की वजह से बीमार ना हों।

धन्यवाद।
आपकी आज्ञाकारी शिष्या
शिवानी ठाकुर

~~सुरभी~~

6. माँ :- सुनो रेखा! देख रही हो आजकल सफ़ाई के लिए ~~मिल~~ कितने अभियान चलाए जा रहे हैं।

बेटी :- हाँ माँ, मैंने भी अपने स्कूल में हो रहे स्वच्छता अभियान में भाग ~~लिया~~ लिया है।

माँ :- शाबाश! हम सब यदि अपने-अपने घर को साफ़ रखेंगे तो पूरा देश अपने आप ही साफ़ हो जाएगा।

बेटी :- माँ! हमें अपने घर के साथ-साथ अपने आस-पास के पर्यावरण को भी स्वच्छ रखना चाहिए तभी हमारा देश प्रदूषण मुक्त, रोग मुक्त एवं गंदगी मुक्त हो ~~पाय~~ पाएगा।

17. कंप्यूटर हमारा मित्र

विज्ञान के क्षेत्र में ~~न~~ ना जाने कितना विकास हो चुका है। आए दिन

नए-नए उपकरण। ऐसा ही एक उपयोगी यंत्र है कंप्यूटर। कंप्यूटर
कंप्यूटर ने हमारे जीवन को कितना सरल बना दिया है। अब छात्र
अपना गृहकार्य कंप्यूटर के सहायता से जल्द-से-जल्द कर पाते
है। कंप्यूटर मनोरंजन में भी सहायक होता है। हम कंप्यूटर
कंप्यूटर पर गाने सुन सकते हैं, कंप्यूटर ने कार्यालयों में
कार्य करना बेहद सरल बना दिया है।
आस्पतालों में, बैंक में, स्कूलों में आदि अनेक जगहों
पर मे कंप्यूटर ने जादू कर रह रखा है। अब तो कंप्यूटर के
बिना जीवन र बिलकुल असंभव सा लगता है।
टी टिकट बुक करना, नए नई चीजें सीखना आदि सभी कार्य
झट से हो जाया करती है।
परंतु हर वस्तु की लाभ और हानि दोनों होते हैं। इसलिए
कंप्यूटर का भी अधिक प्रयोग हमारे सेहत के लिए हानिकारक
है।
बच्चे कंप्यूटर पर खेला करते हैं परंतु अधिक तक खेलने
पर आँखों में विकार आ जाया करते हैं।
अंत में यह कहना उचित है कि कंप्यूटर हमारा बहुत
ही अच्छा मित्र तब ही बन सकता है जब हम उसका
उचित उपयोग करें।

4\. # ज्योति मोमबत्तियाँ एवं दीप

स्कूली छात्रों द्वारा बनाए गए
मोमबत्तियाँ खरीदें और
इनका मनोबल ~~बढ़~~ बढ़ाएँ

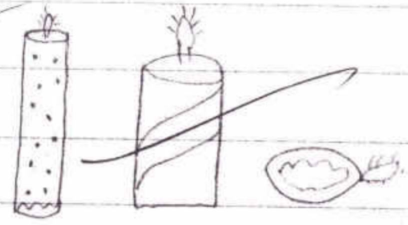

- देर तक ~~स~~ जलें, अच्छी रोशनी दें।
- बेहद सस्ते दामों में उपलब्ध।
- ~~क~~ सरोज पब्लिक ~~स्कूल~~ स्कूल के बच्चों द्वारा बनाई गई मोमबत्तियाँ एवं अन्य अयोगी ~~वस्तुए~~ वस्तुएँ।
- अनेक प्रकार एवं डिज़ाइन में ~~उप~~ उपलब्ध।
- आज ही खरीदें।
- हर परचून की दुकान में ~~उपल~~ उपलब्ध।